शिक्षा का उत्थान

शिक्षक का सम्मान

मिशन शिक्षण संवाद

पेड़-पौधों की विशेषताएँ व उपयोगिता

काव्य मंजरी

शैक्षिक कविताओं का संकलन

मिशन शिक्षण संवाद

पेड़-पौधों की विशेषताएँ व उपयोगिता

01 नीम

नीम भारतीय मूल का पर्णपाती वृक्ष,
समीपवर्ती देशों में भी पाया जाता।
छोटा तना शाखाओं का प्रसार व्यापक,
छाल कठोर दरारयुक्त, शल्कीय होता।।

गहरे हरे रंग के पत्रक होते,
पर्णवृन्त छोटा ही होता।
फल, निबोंली चिकनी होती,
गोलाकार, अण्डाकार होता।।

नीम घनसत् मधुमेह, कैंसर,
खून साफ करने में लाभकारी होता।
चर्मरोग, दाड़ दर्द, रोग-प्रतिरोधक-क्षमता,
आँख आने में प्रयोग होता।।

छायादार वृक्ष के कई गुण व फायदे,
नीम स्वाद में कड़वा होता।
जड़, तना, छाल, पत्ती, फल और फूल,
सभी औषधियों में उपयोगी होता।।

रचना- नैमिष शर्मा (स०अ०)
संवि० उच्च प्रा० विद्यालय- तेहरा
विकास खण्ड व जनपद- मथुरा

पेड़-पौधों की विशेषताएँ व उपयोगिता

ग्वार पाठा

ग्वारपाठा कहो या एलोवेरा,
पेड़ है यह महत्वपूर्ण।
चमत्कार बहुत दिखलाता,
करता यह प्रदूषण दूर।।

खाली पेट खाते हैं इसको,
आँखों की रोशनी बढ़ती।
विटामिन सी और फाइबर की,
मात्रा ज्यादा होती।।

महिलाओं के लिए तो,
संजीवनी है इसका नाम।
त्वचा को सुन्दर मुलायम करे,
कील मुहासों का करे काम तमाम।।

कोलेस्ट्रॉल को कम करने में,
है यह बहुत कारगर।
दिल को करता मजबूत,
डायबिटीज़ का डॉक्टर।।

इतने फायदे एक साथ,
जैसे गागर में सागर।
पेड़ पौधों की रक्षा करो,
और करो इनका आदर।।

रचना

हेमलता गुप्ता (स० अ०)
प्रा० वि० मुकन्दपुर
लोधा, अलीगढ़

पेड़-पौधों की विशेषताएँ व उपयोगिता

03

बाँस

प्रकृति की सबसे सुन्दर रचना,
इन वृक्षों की छाया है।
और धरा की सुन्दरता का,
सार वृक्षों में समाया है।।

बैंब्यूसा है शब्द मराठी,
बैंबू नामक सबसे लम्बी घास है।
बाँस सपुष्पक, आवृतबीजी,
और एक बीजपत्री घास है।।

जीवन में यह पौधा अपने,
फूल धारण करता एक ही बार।
तनों पर पर्वसन्धियाँ खोखली,
जड़ें अपस्थानिक और रेशेदार।।

वातावरण की शुद्धि है करता,
बाँस से हम कागज भी बनाते।
दरी, चटाई, मोढ़े, झूला,
सुन्दर चारपाइयाँ भी बनाते।।

रचना
शिखा वर्मा (इं०प्र०अ०)
पू० मा० वि० स्योढ़ा,
बिसवां, सीतापुर

पेड़-पौधों की विशेषताएँ व उपयोगिता

04

नारियल

नारियल एक वृक्ष ऐसा,
जो लम्बा होकर फल देता।
तना नहीं होता कठोर,
पत्तियों से ऊपर ढ़का रहता।।

कोमल पत्ती हवा में हिलकर,
लम्बी चौड़ी फट जातीं।
नारियल हरा ऊपरी सतह पर,
फिर कत्थई कठोर सतह हो जाती।।

अन्दर से कोमल सफेद,
स्वाद में मीठा गुणकारी होता।
तेल, मिठाई, दवाई बनती,
धार्मिक कामों में प्रयोग होता।।

समुद्री तटवर्ती क्षेत्रों में,
अधिकाधिक पाया जाता।
कच्चे, हरे नारियल का रस,
बीमारियों को दूर भगाता।।

रचना- हरीकान्त शर्मा (प्र०अ०)
परि० संवि० विद्यालय- मुखरई
विकास खण्ड व जनपद- मथुरा

पेड़-पौधों की विशेषताएँ व उपयोगिता

हरसिंगार

पीले-पीले उजले फूलों वाला,
हरसिंगार हरित दिखलाता है।
पत्ते नोकदार अभिमुख जिसके,
काष्ठ रक्त वर्ण दिखलाता है।।

संस्कृत में हर श्रृंगार नाम है,
शुक्लांगी,पारिजात कहलाता है।
गुजराती में परबूटी हैं कहते,
उर्दू में गुलेजाफरी कहलाता है।।

हिमगिरि से बंगाल देश तक,
पंजाब प्रान्त से नेपाल देश तक।
भारत में अपने पाया जाता है।
उपवन में जिसे लगाया जाता है।।

नाइट जैसमिन, ट्री आफ सारो,
अँग्रेजी में नाम कहा जाता है।
वर्षा के ऋतु में जब पुष्पित होता,
उपवन सुरभित हो जाता है।।

रचना
सतीश चन्द्र (प्र०अ०)
प्रा० वि० अकबापुर
पहला, सीतापुर

पेड़-पौधों की विशेषताएँ व उपयोगिता

06

मीठा नीम

आज जान लो तुम,
करी पत्ता या मीठी नीम को।
नियमित सेवन दूर रखे,
हमेशा ही हकीम को।।

इसके पत्ते में होता है,
एमिनो एसिड, विटामिन।
फाइबर आयरन होते हैं,
और पाया जाता प्रोटीन।।

कोलेस्ट्रॉल को हमेशा,
देखो ये रखता है कम।
हार्ट मजबूत है रखता,
सेहत बनी रहती हरदम।।

खाने में इससे स्वाद है बढ़ता,
दालों में लगता है तड़का।
चावल इससे करते हैं फ्राई,
कढ़ी की इसने शोभा बढ़ायी।।

रचना- आकांक्षा मिश्रा (स०अ०)
प्रा० वि० सिकन्दरपुर
सुरसा, हरदोई

पेड़-पौधों की विशेषताएँ व उपयोगिता

07

मदार

आक, अर्क, अकौआ या,
कहो तुम इसे मदार।
सफेद होते फूल इसके
आकृति जैसे छत्तेदार।।

वानस्पतिक पारद के नाम से,
इसे जाना है जाता।
शरीर के हर अंग के,
औषधि के काम है आता।।

आक के पीले पत्ते पर,
घी चुपड कर सेको।
निचोड़ रस डालो कान में,
दर्द सही हो जाए देखो।।

इसके पत्ते को गरम करके,
चोट पर तुम करो सिकाई।
दर्द सही हो जाएगा झट,
न लेनी पड़ेगी दवाई।।

रचना- सुधांशु श्रीवास्तव (स०अ०)
प्रा० वि० मणिपुर
ऐरायां, फतेहपुर

पेड़-पौधों की विशेषताएँ व उपयोगिता

08

शीशम

डलबर्जिया वंश का यह वृक्ष,
मजबूत लकड़ी के लिए विख्यात।
शीशम नामकरण भारत में,
उष्ण कटिबन्धीय वृक्ष प्रख्यात।।

रंग भूरा और छाल मोटी,
फूल खिले पीले रंग के।
औषधि के काम आते,
पत्तियाँ और बीज वृक्ष के।।

लकड़ी से फर्नीचर बनता,
पत्तियाँ पशुओं का आहार।
पेड़ से गिर वर्षा की बूँदें,
भरती धरती का जल भण्डार।।

तने की गोलाई 2.4 मीटर,
30 मीटर ऊँचाई है।
पादप जगत में इस वृक्ष ने,
अपनी पहचान बनायी है।।

रचना - सीमा मिश्रा (स०अ०)
उ. प्रा. विद्यालय काजीखेड़ा
खजुहा, फतेहपुर

पेड़-पौधों की विशेषताएँ व उपयोगिता

09

चन्दन

**सेंटेलम एल्बम नाम वैज्ञानिक,
कर्नाटक प्रदेश है मूल निवास।
वृक्ष परोपजीवी सेंटेलेसी कुल का,
सुगन्धित तेल उत्पादन करता।।**

**लकड़ी व जड़ अत्यन्त कीमती,
पूजा अर्चना के काम है आती।
सैंडल स्पाइक संक्रामक बीमारी,
वृक्ष को जो विकृत कर जाती।।**

**आसवन विधि से तेल निकलता,
अगरबत्ती, हवनसामग्री का निर्माण है होता।
सुगन्धित पावन शीतल चन्दन,
जड़ी-बूटी में प्रयोग है होता।।**

**उड़ीसा का चन्दन उत्तम चन्दन,
वेट्ट चन्दन है शीतल चन्दन।
पीतचन्दन खुशबू है फैलाता ,
संस्कृत में श्रीखण्ड कहलाता।।**

रचना
डॉ० नीतू शुक्ला (प्र०अ०)
मॉडल प्राइमरी स्कूल बेथर 1
सिकंदरपुर कर्ण – उन्नाव

इमली

छोटी 'इ' से होती इमली,
पसन्द करते इसको सारे।
खट्टी-खट्टी होती इमली,
खाते लेकर के चटखारे।।

हृदय रोग और शुगर रोग में,
रहती है यह सहायक।
मोटापा कम करने में भी,
बनती है यह सहायक।।

इमली से बनती है चटनी,
जो लगती है चटपटी।
गुणकारी होती है इमली,
बात नहीं यह अटपटी।।

तन्त्रिका तन्त्र में कर सुधार,
धड़कन करे नियन्त्रित।
इन्फेक्शन को दूर करती,
और दर्द में देती राहत।।

रचना-
श्रीमती पूनम गुप्ता "कलिका"
(स०अ०) प्रा० वि० धनीपुर,
धनीपुर, जनपद अलीगढ़

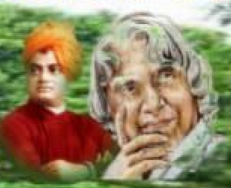

पेड़-पौधों की विशेषताएँ व उपयोगिता

11

पान

भारतीय परम्परा से जुड़ा है पान,
देवों की पूजा, अर्चना में चढ़ता है पान।
पाइपर वंश का, पाइपर बीटल नाम,
भारत, वर्मा, श्रीलंका में पैदा होता पान ।।

तांबुल्ली या नागवल्ली लता का पत्ता है,
खैर, चूना, सुपाड़ी से बीड़ा बनता है ।
मुख की सुगन्धि, शुद्धि, श्रृंगार को बढ़ाता है,
प्यार, स्नेह, प्रेम को आपस में बढ़ाता है।।

मानव- हृदय के जैसे आकृति इसकी,
कड़े, मुलायम, छोटे, बड़े सैकड़ों किस्में जिसकी।
जगन्नाथी, मगही, सांची, बंगाली अनेकों नाम,
सबको आकर्षित करता मीठा बनारसी पान ।।

औषधीय गुणों से भरपूर है यह पान,
चरक संहिता भी करता इसका गुणगान ।
अमीनो अम्ल, विटामिन प्रचुर मात्रा में मिलते,
जो सूखी खाँसी, अपच व्याधि से मुक्ति दिलाते ।।

रचना- प्रतिमा उमराव (स०अ०)
उच्च प्रा०वि० अमौली (संविलियन 1-8)
अमौली, फतेहपुर

पेड़-पौधों की विशेषताएँ व उपयोगिता

12

बबूल

सूखे क्षेत्रों में पाया जाता,
औषधीय अद्भुत यह पेड़।
कई रोगों में बने दवाएँ,
इसके भाग के करके मेल।।

प्रसूति रोग में छाल प्रयोग हो,
दातों की देखभाल दातुन से।
पत्ती और फल हैं लाभदायक,
गोंद प्रयोग बाइन्डर रूप में।।

मासकीट नामक बबूल,
पानी कटाव को कम करता।
रेगिस्तानी जमीन को,
बबूल बढ़ने से रोक देता।।

श्री हरि का निवास इसमें,
प्राचीन मान्यताएँ पाएँ।
बोया पेड़ बबूल का जो,
आम कहाँ से हम खाएँ।।

रचना
अरविन्द कुमार सिंह (स०अ०)
प्रा० वि० धवकलगंज
बड़ागाँव, वाराणसी

पेड़-पौधों की विशेषताएँ व उपयोगिता

13

बेंत

बेंत की लकड़ी होती मजबूत,
करते इसको उपयोग खूब।
इससे बनते टिकाऊ फर्नीचर,
हैंडीक्राफ्ट भी बनते खूब।।

उपोष्ण या उष्ण कटिबन्धीय,
जलवायु का यह पौधा है।
दलदल में है उग जाता,
सूखे में भी रह सकता है।।

बेंत के जालीदार फ्रेम में,
मुर्गी पालन होता है।
और इसकी लकड़ी से,
गृह निर्माण भी होता है।।

अत्यधिक होने पर इससे,
कुटीर उद्योग बन जाता है।
जल वाली बंजर जमीन पर,
ग्लोबल वार्मिंग भी निबटाता है।।

बेंत के झुरमुट में,
पशु-पक्षी आवास बनाते हैं।
और इसके उत्पादन,
हर स्तर पर रोजगार दिलाते हैं।।

रचना
रेनू (स०अ०)
प्रा० विद्यालय कूँड़ी
बड़ागाँव, वाराणसी।

पेड़-पौधों की विशेषताएँ व उपयोगिता

14

अशोक वृक्ष

वृक्ष बहुत हैं धन्य धरा पर,
किन्तु पावन वृक्ष है अशोक।
यदि लगा लो घर-आँगन में,
निकट न आए कोई शोक।।

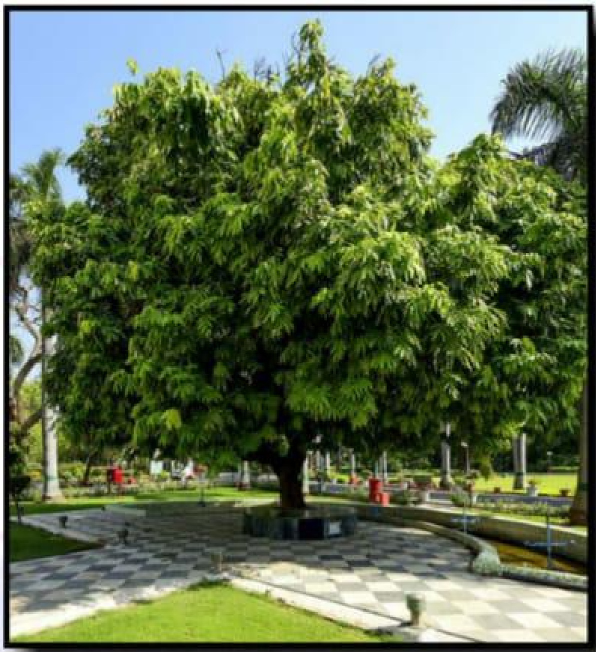

हेमपुष्पा, ताम्रपल्लव है अन्य नाम,
एक बूटी किन्तु करती लाखों काम।
पत्ते, फूल, छाल, बीज भी होते प्रयोग,
जड़ इसकी दूर भगाती अनेकों रोग।।

महिला-रोग, त्वचा रोग, पथरी में,
काम आते बीज, छाल और प्रतान।
माँगलिक कार्य व वास्तु शास्त्र में,
इसकी महिमा का बहुत बखान।।

सुख-समृद्धि, वैभव-ऊर्जा का भण्डार,
सही दिशा में लगाने से लक्ष्मी मिले अपार।
पत्तों की इसके जो द्वार लगाए बन्धनवार,
उसका बुरी नजर से बचाए घर-संसार।।

रचना
दीपिका जैन (स०अ०)
प्रा० वि० बनगवां
सालारपुर, बदायूँ

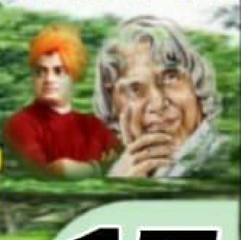

पेड़-पौधों की विशेषताएँ व उपयोगिता

15

सहजन

मुनगा,सुजना,सेंजन हैं,
सहजन के नाम अनेक।
मोरिंगा ओलिफेरा है,
वानस्पतिक नाम नेक।।

पोषक तत्वों से भरपूर,
ब्लड प्रेशर कंट्रोल करता।
खाने में भी स्वाद भरपूर,
मोटापे को है कम करता।।

बनता काढ़ा पत्तियों से,
देता आराम सिरदर्द में।
उल्टी और घबराहट से,
होता आराम मिनटों में।।

कैल्सियम का स्रोत सहजन,
दाँतो को मजबूत करता।
औषधि है जिसकी पहचान,
शरीर का खून भी साफ करता।।

शिक्षा का उत्थान
मिशन शिक्षण संवाद
शिक्षक का सम्मान

रचना
अनुप्रिया यादव
उ॰प्रा॰वि॰काजीखेड़ा
खजुहा फतेहपुर

पेड़-पौधों की विशेषताएँ व उपयोगिता

16

बरगद

विशाल बहुवर्षीय वृक्ष है बरगद,
भारत का राष्ट्रीय वृक्ष है बरगद।
कहते वट, बड़ वृक्ष हैं इसको,
अति महत्वपूर्ण वृक्ष है बरगद।।

पूरा वृक्ष रोगों की दवा,
दूध, छाल, फल, बीज दवा।
कफ, वात, पित्त दोष से पीड़ित,
हो नाक, कान, बालरोग हैं शमनित।।

तना सीधा कठोर है होता,
फल लाल, छोटा, गोल है होता।
शाखाओं से निकलें जड़ें,
बरोह स्तम्भाकार जड़ें।।

हिन्दू धर्म में वृक्ष की महत्ता,
शिव रूप में पूजन होता।
होती व्रत त्योहार में पूजा,
ऑक्सीजन का जोड़ न दूजा।।

🙏रचना
सुमन पांडेय (प्र०अ०)
प्रा० वि० टिकरी-मनौटी
खजुहा, फतेहपुर

पेड़-पौधों की विशेषताएँ व उपयोगिता

17

तुलसी

घर-घर में इसकी पूजा होती,
औषधि के रुप में काम आए।
यह झाड़ी के रुप में उगता,
पवित्र पौधा तुलसी कहलाए।।

दो से तीन फुट तक ऊँचा,
तुलसी का पौधा होता है।
इसकी पत्तियों का आकार,
अण्डाकार ही होता है।।

इसकी पत्ती का सेवन कई,
रोग को जड़ से मिटाता है।
सर्दी-खाँसी, श्वास सम्बन्धी,
रोगों के काम यह आता है।।

वर्षा ऋतु में तुलसी के,
नए-नए पौधे उग आते हैं।
शीतकाल में फूलते पौधे,
दो, तीन साल में मुरझा जाते हैं।।

रचना- शहनाज़ बानो (स० अ०)
पू० मा० वि० भौंरी-1
मानिकपुर, चित्रकूट

पेड़-पौधों की विशेषताएँ व उपयोगिता

18

अमरूद

एक वृक्ष ने जन्म लिया,
वेस्टइंडीज की धरती पर।
वानस्पतिक नाम है सीडिएम ग्वायवा,
प्रसिद्धि पायी जग में अमरूद ने।।

मार्च से लेकर माह जुलाई तक,
बोया जाता उष्णकटिबंधीय इलाकों में।
कैल्शियम, फास्फोरस, पेक्टिन से भर,
गुदेदार, रस, पौष्टिकता पायी अमरुद ने।।

जाड़ा हो या हो बरसात,
सुबह का स्वाद बढ़ाता हरा फल अमरूद।
जब हो जाए मुख में छाले,
हरी पीड़ा मुख की पत्ती अमरुद ने।।

जब हो जाए शुगर बीमारी,
तब काम आए फल अमरूद।
जब जी मिचलाए होवे पेट में खराबी,
अपने फाइबर गुणों से हरी बीमारी अमरुद ने।।

रचना- साधना सचान (प्र०अ०)
उ० प्रा० वि० ढोढ़ियाही
तेलियानी, फतेहपुर

शिक्षा का उत्थान

मिशन शिक्षण संवाद

शिक्षक का सम्मान

पेड़-पौधों की विशेषताएँ व उपयोगिता

19

ताड़

ताड़ का वृक्ष होता है निराला,
औषधि गुणों की है यह शाला।
इसका फल होता काष्ठीय गुठलीवाला,
सिर पर पत्ते धारण करता यह आला।।

गरम देशों का है यह राजा ,
विटामिन की है इसमें प्रचुर मात्रा।
बेरी-बेरी रोग का है यह रक्षक,
वात, पित्त व कफ का है नाशक।।

दक्षिण भारत में है इसका विस्तार,
कई रोगों का करता है निदान।
ऊँचाई में न कोई इसका शानी,
इसका रस है अत्यधिक गुणकारी।।

गोदावरी नदी के किनारे है इसकी शोभा,
ताड़पत्र थे पुराने ग्रंथों की शोभा।
पूरा वृक्ष ही बहुत उपयोगी,
करता है हर मानवीय जरूरत को पूरी।।

रचना- अंजली मिश्रा (स०अ०)
प्राथमिक विद्यालय असनी-1
भिटौरा, फतेहपुर

पेड़-पौधों की विशेषताएँ व उपयोगिता

20

पीपल

सबसे अधिक आक्सीजन देता,
पीपल पेड़ महान है।
औषधियाँ भी देता रहता,
ये अपना सम्मान है।

हरे-भरे पत्ते सुन्दर,
फल चिकने गोलाकार हैं।
मोटी-मोटी शाखायें इसकी,
ये मोरेसी कुल की जान है।

हाथी प्रेम से इसको खाता,
गजभक्ष्य इसका नाम है।
बुद्ध को ज्ञान मिला था इसलिए,
बोधिवृक्ष भी नाम है।

छाल, डाल और पत्ती इसकी,
औषधियों की खान है।
हिन्दू धर्म में पूजा जाता,
देवों का वरदान है।

रचना-
आराधना सिंह (प्र.अ.)
उच्च प्राथमिक विद्यालय लोढ़वारा
चित्रकूट

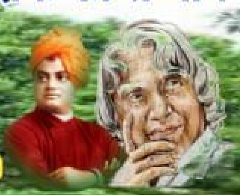

पेड़-पौधों की विशेषताएँ व उपयोगिता

21

देवदार

सीधे तने वाला शंकुधारी पेड़ देवदार है,
जिसके पत्ते लम्बे और गोलाईदार हैं।
लकडी मजबूत और हल्की सुगन्धित होती है,
इसकी लम्बाई 72 मीटर तक हो सकती है।।

इसका मूलस्थान पश्चिमी हिमालय पर्वत है,
यह मिलता उत्तराखण्ड, तिब्बत तक है।
यह वृक्ष पहाड़ी संस्कृति का अभिन्न अंग है,
इसका स्वाद तीखा और कर्कश सुगन्ध है।।

इसके शंकु का आकार फर से मिलता है,
देवदार का वृक्ष सदैव हरा रहता है।
लेखक और कवियों को अक्सर,
अपनी ओर आकर्षित करता है।।

इसकी लकड़ी भवन निर्माण मे काम आती है,
बुखार और फेफडों की बीमारी दूर भगाती है।
इसकी लकड़ी का पेस्ट ललाट पर लगाते हैं,
इसके तेल से साबुन और इत्र भी बनाते हैं।।

रचना- ज्योति सागर (स०अ०)
उ० प्रा० वि० सिसाना
बागपत, बागपत

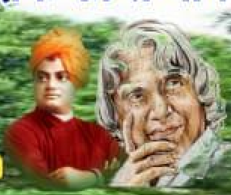

पेड़-पौधों की विशेषताएँ व उपयोगिता

22

अर्जुन

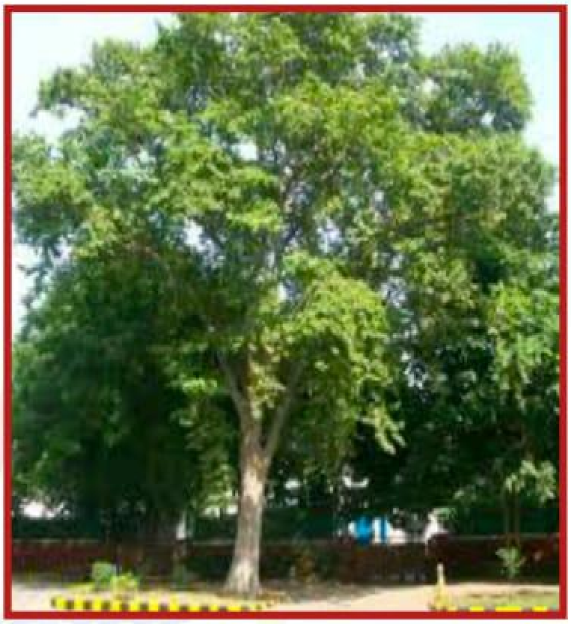

औषधीय वृक्षों मे जाना जाता,
बडा अनोखा ये अर्जुन वृक्ष है।
कुहू और नदीसर्ज भी इसके नाम हैं,
यह एक बडा सदाहरित वृक्ष है।।

इसकी लम्बाई 80 फीट तक हो सकती है,
हिमालय की तराई, शुष्क पहाड़ी क्षेत्र।
बिहार और म० प्र० में है इसका समावेश,
नदी किनारे होता है इसका दर्शन नेत्र।।

रक्त रोग दूर करता है छाल का काढा,
हृदय के लिए शक्तिवर्धक कहलाता है।
कॉलेस्ट्रॉल, रक्तचाप का रक्षक बन,
बालों और दाँतों को भी चमकदार बनाता है।।

पोटैशियम, कैल्शियम, मैग्नीशियम तत्व,
बढाते हैं इसके अनेकों औषधीय गुण।
अर्जुन वृक्ष को जानकर, बचाकर,
आओ करें जीवन को रोगमुक्त।।

रचना- नीलम भास्कर (स०अ०)
उ० प्रा० वि० सिसाना (कक्षा 1-8)
बागपत बागपत

मंगलवार उत्थान

मिशन शिक्षण संवाद

शिक्षक का सम्मान

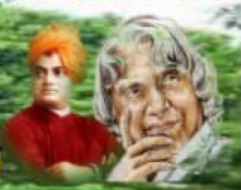

पेड़-पौधों की विशेषताएँ व उपयोगिता

23

आम वृक्ष

आम का पेड़ हमारे गाँव,
शीतल लगती इसकी छाँव।
लू में पन्ना आता काम,
राष्ट्रीय फल हमारा आम।।

हवन में हो लकड़ी प्रयोग,
दूर भगाता कितने रोग।
गृह दोष को करता दूर,
विटामिन 'ए' से है भरपूर।।

पत्तियाँ इसकी सदाबहार,
गिरकर आती बारम्बार।
प्रजनन क्षमता ये बढ़ाती,
चेहरे पर लाती निखार।।

पाचन क्रिया दुरुस्त यह करता,
नयनों को ज्योति से भरता।
गुठली कॉलेस्ट्रॉल घटाए,
मोटापे को दूर भगाए।।

रचना
फ़राह हारून"वफ़ा" (प्र०अ०)
प्रा० वि० मढ़िया भांसी
सालारपुर, बदायूँ

शहूतत वृक्ष

सुन्दर फल दिखता शहतूत,
तुर्की में कहते हैं दूत।
तूती कहें मराठी में,
संस्कृत में नाम है तूत।।

फल तो इसका बेरी है,
काया लगे सुनहरी है।
सर्दी-ज़ुकाम को करता दूर,
फास्फोरस से है भरपूर।।

रेशम कीट का है ठिकाना,
और गुणों का भी ख़जाना।
मोरस अल्बा वैज्ञानिक नाम,
देता यकृत को आराम।।

लाल, हरे और फल हैं पीले,
खट्टे-मीठे, गीले-गीले।
नाजुक बहुत यह होता है,
जीवन काल भी छोटा है।।

रचना-
जावेद इक़बाल
(स०अ०)
प्रा० वि० मढ़िया भांसी
सालारपुर, बंदायूँ

पेड़-पौधों की विशेषताएँ व उपयोगिता

25

पलाश वृक्ष

सुन्दर बहुत है वृक्ष पलाश,
मन को रहती जिसकी तलाश।
आनन्दित होता पुष्प पलाश,
आता जब चैत्र का मास।।

पर्ण, किंशुक, टेसू , केसू ,
सुन्दर जैसे महिला के गेसू।
कहलाए ये "जंगल की आग",
सम्मान करे डाक तार विभाग।।

याज्ञिक, रक्तपुष्प, वक्रपुष्प,
पवित्र बहुत ही ब्रह्मवृक्ष।
उत्तर प्रदेश का राज्य पुष्प,
औषधीय गुणों से भरा ये पुष्प।।

ढ़ाक के होते तीन पात,
बताए जीवन की गहरी बात।
जब आए होली का त्योहार,
याद आए पुष्प पलाश।।

रचना
स्मृति परमार (स०अ०)
प्रा० वि० मामूरगंज
कादरचौक, बदायूँ

पेड़-पौधों की विशेषताएँ व उपयोगिता

26

जूट

जूट रेशा सुनहरा प्रकृति का अनमोल उपहार,
उत्पादन में भारत है अव्वल जाने सारा संसार।
पटसन पौधे से मिलता है यह एक पादप रेशा,
वर्षा ऋतु की गर्म-नम जलवायु ही चाहे हमेशा।।

फसल हेतु उपयुक्त है जलोढ़ कछार माटी,
तीन माह में पीत पुष्प से खेती लहलहाती।
काम आता तना पटसन का रेशे मिलते इससे,
आठ दस फीट के पौधों के कटते मध्य हिस्से।।

रेटिंग प्रक्रिया के बाद रेशा जूट का मिल पाता,
पटसन के तनों को रुका हुआ जल गलाता।
चार पांच दिनों में जूट के हो जाते तने मुलायम,
भाग मुलायम करके अलग रेशे जूट के पाते हम।।

कारकोरस ओलिटोरियस इसका वैज्ञानिक नाम,
रेशा बहुत मजबूत जूट का आता बड़े ही काम।
जूट से बनती रस्सी, डलिया, दरी, तंबू, तिरपाल,
भारत में सर्वाधिक उत्पादन करता है बंगाल।।

रचना
डॉ० रैना पाल (स०अ०)
उ० प्रा० वि० (1-8) आमगांव,
जगत, बदायूँ

पेड़-पौधों की विशेषताएँ व उपयोगिता

साल वृक्ष

27

वृक्षों में है एक वृक्ष महान,
साल वृक्ष मजबूती की पहचान।
लकड़ी चलती सालों साल,
जीवित रहता चालीस साल।।

साल, साखू, द्विबीजपत्री,
यह है एक पर्णपाती।
संस्कृत में अग्निवल्लभा,
अश्ववर्ण या अश्वकर्णिका कहाती।।

इस वृक्ष का है बहुत महत्व ,
औषधि में प्रयोग होता इसका तत्व।
आध्यात्म में भी है इसका महत्व,
प्यास बुझाता इसका सत्व।।

आदिवासिओं के लिए तो,
ये मानो कल्पवृक्ष कहलाए।
फर्नीचर, मकान, सजावटी सामान,
और औषधि बनाने में काम है आए।।

रचना-
चंचल उपाध्याय (प्र०अ०)
प्रा० वि० कोट
बिसौली, बदायूँ

पेड़-पौधों की विशेषताएँ व उपयोगिता

28

आँवला

एक औषधिय वृक्ष है आँवला,
यह वृक्ष सभी वृक्षों में है निराला।
इसके फल होते हैं हरे ओर गुदेदार,
स्वाद होता है जिनका थोड़ा कसैला।।

करीब 25 फुट होती इसकी लम्बाई,
एशिया, यूरोप, अफ्रीका में पाया जाता।
समस्त भारत के बाग़ और बगीचों में,
बड़े ही शौक से इसे लगाया जाता।।

इसकी छाल राख के रंग की,
पत्ते इमली के पत्तों जैसे होते हैं।
फूल इसके सुन्दर पीले रंग के,
हरे फल इसके आँवला कहलाते हैं।।

औषधीय गुण वाला इसका फल है,
आयुर्वेद में इसका महत्व बताते हैं।
विटामिन सी से भरपूर इस फल से,
आचार, जैम, कैंडी, मुरब्बा बनाते हैं।।

रचना- रीना कुमारी (स०अ०)
उ० प्रा० वि० सिसाना
बागपत, बागपत

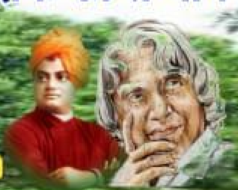

पेड़-पौधों की विशेषताएँ व उपयोगिता

29

बेलपत्थर

बेल या बेलपत्थर फल का,
पेड़ भारत में पाया जाता है।।
रोगनाशक क्षमता के कारण,
इसे बिल्व भी कहा जाता है।।

हिमालय की तराई में सूखे,
पहाड़ी क्षेत्रों में पाया जाता है।
दक्षिण भारत के क्षेत्रों में बेल,
जंगल के रूप में फैला होता है।।

इसके वृक्ष 15-30 फीट ऊँचे, कंटीले,
व मौसम में फलों से लदे रहते हैं।
इसके पत्ते संयुक्त, विपत्रक, गंधयुक्त,
तथा स्वाद में कुछ तीखे होते हैं।।

बेल फल का व्यास 5-17 सेमी,
खोल कड़ा, हरा, चिकना होता है।
जिसे तोड़ने पर मीठा रेशेदार व,
स्वादिष्ट, सुगन्धित गूदा निकलता है।।

एगले मारमेलोस इसका,
वैज्ञानिक नाम होता है।
धार्मिक महत्व के कारण इसे,
मन्दिरों के पास लगाया जाता है।।

रचना- जितेन्द्र कुमार (स०अ०)
प्रा० वि० धनौरा सिल्वर नगर-1
बागपत, बागपत

पेड़-पौधों की विशेषताएँ व उपयोगिता

सागौन वृक्ष

हरा भरा यह हरदम रहता,
बहुत ही सुन्दर, प्यारा दिखता।
शाक वृक्ष इसे कहें संस्कृत में,
सागौन, सागवान हिन्दी में।।

टीक ट्री इंग्लिश में कहते,
जुलाई माह से फूल हैं खिलते।
सितम्बर माह में खिल हो तैयार,
सागौन पर लगते फल गोलाकार।।

टेक्सोना ग्रैंडिस वानस्पतिक नाम,
इसकी लकड़ी से बनें फर्नीचर तमाम।
तमिलनाडु, कर्नाटक, उत्तर प्रदेश,
पाया जाता है उड़ीसा, मध्य प्रदेश।।

80 से 100 फुट लम्बा होता,
यह वृक्ष बड़ा गुणकारी होता।
सागौन की लकड़ी बहुत प्रसिद्ध,
बहुमूल्य, कीमती हुई है सिद्ध।।

रचना- मन्जू शर्मा (स०अ०)
प्रा० वि० नगला जगराम
सादाबाद, हाथरस

शिक्षा का उत्थान

शिक्षक का सम्मान

मिशन शिक्षण संवाद

पेड़-पौधों की विशेषताएँ व उपयोगिता

रचनाकारों की सूची

01- नैमिष शर्मा, मथुरा
02- हेमलता गुप्ता, अलीगढ़
03- शिखा वर्मा, सीतापुर
04- हरिकान्त शर्मा, मथुरा
05- सतीश चन्द्र, सीतापुर
06- आकांक्षा मिश्रा, हरदोई
07- सुधांशु श्रीवास्तव, फतेहपुर
08- सीमा मिश्रा, फतेहपुर
09- नीतू शुक्ला, उन्नाव
10- पूनम गुप्ता, अलीगढ़
11- प्रतिमा उमराव, फतेहपुर
12- अरविन्द सिंह, वाराणसी
13- रेनू, वाराणसी
14- दीपिका जैन, बदायूँ
15- अनुप्रिया यादव, फतेहपुर
16- सुमन पांडेय, फतेहपुर
17- शहनाज़ बानो, चित्रकूट
18- साधना सचान, फतेहपुर
19- अंजलि मिश्रा, फतेहपुर
20- आराधना सिंह, चित्रकूट
21- ज्योति सागर, बागपत
22- नीलम भास्कर, बागपत
23- फ़राह हारून, बदायूँ
24- जावेद इक़बाल, बदायूँ
25- स्मृति परमार, बदायूँ
26- रैना पाल, बदायूँ
27- चंचल उपाध्याय, बदायूँ
28- रीना कुमारी, बागपत
29- जितेन्द्र कुमार, बागपत
30- मन्जू शर्मा, हाथरस

तकनीकी सहयोग

आयुषी अग्रवाल, मुरादाबाद

मार्गदर्शन:- राजकुमार शर्मा, चित्रकूट

संकलन:- मिशन शिक्षण संवाद